

---

# Nirvritipanchakam

---

## निर्वृतिपञ्चकम्

---

### Document Information



---

Text title : Nirvritipanchakam by Narayanaguru

File name : nirvRritipanchakam.itx

Category : misc, panchaka

Location : doc\_z\_misc\_general

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Numbered 46

Latest update : June 30, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 24, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Nirvritipanchakam

---

# निर्वृतिपञ्चकम्

---



का नाम देशः का जातिः प्रवृत्तिः का कियद्वयम् ।  
इत्यादि वादोपरतिर्यस्य तस्यैव निर्वृतिः ॥ १ ॥

आगच्छ गच्छ मा गच्छ प्रविश क्व नु गच्छसि ।  
इत्यादि वादोपरतिर्यस्य तस्यैव निर्वृतिः ॥ २ ॥

क्व यास्यासि कदायातः कुत आयासि कोऽसि वै ।  
इत्यादि वादोपरतिर्यस्य तस्यैव निर्वृतिः ॥ ३ ॥

अहं त्वं सोऽयमन्तार्हि बहिरस्ति न वास्ति वा ।  
इत्यादि वादोपरतिर्यस्य तस्यैव निर्वृतिः ॥ ४ ॥

ज्ञाताज्ञातसमः स्वान्यभेदशून्यः कुतो भिदा ।  
इत्यादि वादोपरतिर्यस्य तस्यैव निर्वृतिः ॥ ५ ॥

इति श्रीनारायणगुरुविरचितं निर्वृतिपञ्चकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by PSA Easwaran

---

---

*Nirvritipanchakam*

pdf was typeset on March 24, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

